उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के अल्पसंख्यक वर्ग के छात्र एवं छात्राओं के आकांक्षा स्तर पर आत्म–सम्मान के प्रभाव का अध्ययन

डॉ. तृप्ति श्रीवास्तव*

सारांश

प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के अल्पसख्यक वर्ग के किशोर–किशोरियों के आत्म–सम्मान का उनक आकांक्षा स्तर(ADS व GDS) पर प्रभाव का अध्ययन करना था । न्यादर्श के रूप में उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के 300 छात्र एवं 300 छात्राओं का चयन किया गया। डाटा संकलन के लिये स्व–बोध मापनी –जी.पी. ठाकुर एवं एम.एस. प्रसाद एवं आकांक्षा स्तर मापनी –एम. भार्गव एवं एम. ए. शाह को लिया गया। यह परिणाम प्राप्त हुआ कि अल्पसंख्यक वर्ग के किशोर–किशोरियों के आत्म सम्मान का उनके आकांक्षा स्तर(ADS व GDS) पर कोई सार्थक प्रभाव नही पड़ता है।

प्रस्तावना

किशोरावस्था तक आते–आते समाज के संपर्क में आने से उसके जीवन की आवश्यकताओं, रुचियों, मूल्यों एवं आकांक्षाओं में परिवर्तन होता है। यह एक ऐसी अवस्था है जब किशोर अपनी इच्छाओं, आकांक्षाओं की पूर्ति का अभाव महसूस करता है। इस अवस्था में किशोर प्रत्येक बात को आलोचनात्मक दृष्टि से देखता है। इसलिये समाज की परम्परागत रीतियों को वह पसंद नहीं करता है। यह अवस्था शारीरिक एवं मानसिक स्थिति के परिवर्तन की अवस्था है जो जोशपूर्ण होने के साथ–साथ आदर्श व यथार्थ का अध्ययन करती है। अतः ''किशोरावस्था बड़े तनाव एवं बल तूफान तथा विरोध की अवस्था है।'' किशोर के विचार आदर्शवादी व दिवास्वप्न लिये होते हैं, उनके विचारों को मान्यता न मिलने के कारण वे अपने विचारों में परिवर्तन कर लेते हैं। उनमें परिपक्वता का अभाव होने के कारण वे कल्पना की उड़ान भरते हैं।

किशोरों में स्वतंत्रता की भावना भी प्रकट होती है। वे किसी बंधन को स्वीकार नहीं करते हैं। वे रीति रिवाजों तथा अवैज्ञानिक कार्यों को पसंद नहीं करते हैं। बी.एन.झा के अनुसार– ''जीवन में नवीन दृष्टिकोण का संचार होने के कारण उनमें आत्म सम्मान की प्रबल प्रवृत्ति दृष्टिगोचर होती है। किशोर अपने को बंधनमुक्त रखना चाहता है। अतः किशोर, किशोरियों को उचित शिक्षा प्रदान कर उनके व्यक्तित्व का विकास किया जाना चाहिये। शिक्षा का वास्तविक लक्ष्य व्यक्ति के व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास करना है जिससे विद्यार्थियों में आत्मविश्वास, आत्म–सम्मान जैसे शील गुणों का विकास हो सके।

आत्म–सम्मान से तात्पर्य स्वयं का बोध करना अर्थात् जानना है, अपने आपको मापना है। आत्म–सम्मान का अर्थ है कि व्यक्ति अपने ही विचारों में स्वयं को कितना मापता है या अपने ही विचारों में स्वयं को कितना महत्वपूर्ण मानता है। वह स्वयं को किस प्रकार देखता है तथा अपनी उपलब्धियों के बारे में क्या महसूस करता है।

आत्म–सम्मान की भावना इसलिये भी महत्वपूर्ण होती है क्योंकि यह व्यक्ति को स्वयं के प्रति गर्व महसूस करने तथा सिर ऊँचा रखने में सहायता प्रदान करती है। यह इस बात की भी प्रेरणा देती है कि व्यक्ति क्या कर सकता है। आत्म–सम्मान द्वारा स्वयं को नये कार्यों को करने का साहस तथा उस कार्य को करने की शक्ति एवं विश्वास प्राप्त होता है।

आत्म–सम्मान का प्रभाव आकांक्षाओं एवं आकांक्षा स्तर पर भी पड़ता है। किशोर अपने भावी जीवन के प्रति महत्वाकांक्षी हो जाते हैं। वे अपने लक्ष्य को पाने की कोशिश में लगे रहते हैं।

हरलॉक के अनुसार– आकांक्षा का अर्थ अपने आप से या अपनी वर्तमान स्थिति से अधिक ऊँचा उठने की इच्छा अथवा प्रयास से है। लक्ष्य या मूल्य आदि को प्राप्त करने की इच्छा आकांक्षा कहलाती है तथा इन मूल्यों और लक्ष्यों के प्रति व्यक्ति की इच्छा की तीव्रता

*सहायक प्राध्यापक, हितकारिणी प्रशिक्षण महिला महाविद्यालय, जबलपुर (मध्य प्रदेश)

का स्तर आकांक्षा स्तर कहलाता है। प्रत्येक व्यक्ति में आकांक्षा का स्तर भिन्न–भिन्न पाया जाता है।

आकांक्षा व्यक्ति के जीवन निर्माण को प्रभावित करती है। एक व्यक्ति क्या बनना चाहता है तथा इस दिशा में वह क्या प्रयास कर रहा है या वह कितनी सफलता प्राप्त करना चाहता है, यह सब उसकी आकांक्षा और उसके स्तर पर निर्भर करता है। मनुष्य की आवश्यकतायें उसकी आकांक्षाओं की देन हैं। आकांक्षाओं का स्तर जितना ऊँचा होता जायेगा, आवश्यकतायें उसी के अनुसार बनती चली जायेगीं। यदि आकांक्षाओं के अनुरूप आवश्यकताओं की संतुष्टि नहीं होती तो व्यक्ति में निराशा, हताशा व असंतोष उत्पन्न हो जाता है। यह देखा गया है कि जो व्यक्ति अपने उद्देश्य अपनी सीमा, क्षमताओं से ऊँचे बना लेते हैं, उन्हें आकांक्षाओं की पूर्ति में कठिनाई होती है और वे असफलता की स्थिति में हताश हो जाते हैं।

वर्तमान युग प्रतिस्पर्धा का युग है। अपनी भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति व समाज में अपनी विशेष पहचान बनाने के लिये व्यक्ति प्रयत्नशील रहता है। वर्तमान समय में देश की बढ़ती जनसंख्या व मशीनी युग के कारण शिक्षित बेरोजगारी, कम होते जीवन मूल्यों, आर्थिक असमानताओं के कारण हर क्षेत्र में प्रवेश पाना व सफलता प्राप्त करना असंभव लगता है। विद्यार्थियों को प्रतियोगी परीक्षाओं में सफलता प्राप्त करने के लिये मनोवैज्ञानिक गुणों का होना आवश्यक है जिससे विद्यार्थी सफलता के अधिकतम अवसर प्राप्त कर सकते हैं। इन गुणों में आत्म–सम्मान ,आकांक्षा स्तर आदि का अत्यधिक महत्वपूर्ण योगदान रहता है क्योंकि आत्म–सम्मान विद्यार्थी को स्वयं को मापने, स्वयं के मूल्यों को मापने तथा स्वयं पर गर्व करने की अनुभूति कराता है। साथ ही साथ उसे सदैव ऊँचा उठने, आगे बढ़ने के लिये उत्प्रेरित करता है। अतः विद्यार्थियों के आत्म–सम्मान की जानकारी अपेक्षित है। विभिन्न आत्म–सम्मान स्तर से छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि व आकांक्षायें भी प्रभावित होती हैं। अति उच्च आकांक्षाओं एवं आकांक्षा स्तर को सीमित कर तथा निम्न आकांक्षा स्तर को बढ़ाकर एवं आत्म–सम्मान के स्तर को बढ़ाकर शैक्षिक निष्पादन को भी बढ़ाया जा सकता है। अतः किशोर विद्यार्थियों के आत्म–सम्मान एवं,आकांक्षा स्तर का मूल्यांकन करना आवश्यक है। आत्म–सम्मान का प्रभाव आकांक्षाओं एवं आकांक्षा स्तर पर भी पड़ता है। पार्टिगंटन, किम्बर्ली (2004) ने शहरी अल्पसंख्यक किशोरों के आत्म–सम्मान,, शैक्षिक आकांक्षा व शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थक अन्तर पाया। कोहेन, वाल्टन (2011) ने अल्पसंख्यक समुदाय के छात्रों पर अध्ययन कर यह परिणाम पाया कि अल्पसंख्यक समुदाय के लैटिनो अश्वेत छात्रों की तुलना में श्वेत छात्रों का आत्म–सम्मान स्तर उच्च था। प्रैगर (1979) ने आत्म–सम्मान व शैक्षिक आकांक्षा के मध्य कोई संबंध नहीं पाया। रूबी एवं अन्य (2004) ने बताया कि उच्च आत्म–सम्मान चुनौतियों का सामना करने तथा लक्ष्य को प्राप्त करने के लिये क्रिया शील बनाता है। मुदस्सर हामिद गेनी (2012) ने शारीरिक विकलांग बालकों का स्व प्रत्यय, आकांक्षा स्तर, शैक्षिक उपलब्धि सामान्य बालकों की तुलना में कम पाया।

उद्देश्य

उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के अल्पसंख्यक वर्ग के छात्र एवं छात्राओं के आकांक्षा स्तर पर आत्म–सम्मान के प्रभाव का अध्ययन करना।

परिकल्पना

अल्पसंख्यक वर्ग के छात्र एवं छात्राओं के आकांक्षा स्तर पर आत्म–सम्मान का सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।

शोध विधि– शोध कर्ता ने प्रदत्त संकलन के लिये सर्वेक्षण अनुसंधान पद्धति का प्रयोग किया है।

उपकरण

1. **आकांक्षा–स्तर मापनी** – एम. भार्गव एवं एम. ए. शाह
2. **स्व–बोध (आत्म सम्मान)मापनी** – श्री जी.पी. ठाकुर एवं एम.एस. प्रसाद

न्यादर्श

विद्यार्थी	संख्या
छात्र	300
छात्राएं	300
योग	600

अन्तिम न्यादर्श –2 (अ)

आत्म सम्मान के स्तर	छात्र	छात्राएं	योग
उच्च	89	110	199
निम्न	65	74	139
योग	154	184	338

शोध कार्य विधि

सर्वप्रथम विद्यालयों की सूची तैयार कर विद्यालयों में जाकर अल्पसंख्यक वर्ग के छात्र–छात्राओं से सर्वे विधि द्वारा प्रदत्त सकंलन का कार्य किया गया । पहले आत्म–सम्मान मापनी भरवायी गयी व विभिन्न आत्म–सम्मान स्तरों को ज्ञात किया गया। तत्पश्चात आकांक्षा स्तर मापनी का प्रशासन किया गया। तदुपरांत गणना का कार्य किया गया । गणना के उपरांत प्राप्त प्राप्तांकों का सांख्यिकीय विधियों (मध्यमान, प्रमाप विचलन, क्रान्तिक अनुपात एवं प्रसरण विश्लेषण) द्वारा विश्लेषण किया गया। प्राप्तांकों के आधार पर परिणामों का विश्लेषण व व्याख्या की गई ।

परिणामों का विश्लेषण व व्याख्या

अल्पसंख्यक वर्ग के उच्च एवं आत्म–सम्मान के छात्र एवं छात्राओं के आकांक्षा स्तर–ADS (उपलब्धि भिन्नता प्राप्तांक) के परिणाम

आत्म–सम्मान स्तर	अल्पसंख्यक वर्ग	छात्र संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (SD)
उच्च	छात्र	89	0.14	4.79
	छात्राएं	110	0.38	3.98
निम्न	छात्र	65	1.83	3.06
	छात्राएं	74	0.25	4.30

प्रासरण विश्लेषण (एनोवा) सारणी

प्रसरण के स्रोत	स्वतंत्रता के अंश (d.f)	वर्गों का योग (Sum of squares)	वर्गों का मध्यमान (Mean Square)	'एफ.' अनुपात (F. Ratio)	'पी' मूल्य (P value)
समूह के मध्य	3	130.55	43.52	2.55	>0.05

स्वतत्रंता के अंश – 3, 334

0.05 स्तर पर सार्थकता के लिये न्यूनतम मान – 2.65

0.01 स्तर पर सार्थकता के लिये न्यूनतम मान – 3.88

उपरोक्त सारणी में उच्च व निम्न आत्म–सम्मान वाले अल्पसंख्यक वर्ग के छात्र एवं छात्राओं के आकांक्षा स्तर–ADS के तुलनात्मक परिणाम प्रदर्शित किये गये हैं। इन परिणामों से स्पष्ट होता है कि विभिन्न समूहों के मध्य सांख्यकीय दृष्टिकोण से सार्थक अंतर नहीं है क्योंकि प्राप्त एफ अनुपात का मान 2.55 है जो कि 0.05 स्तर पर सार्थकता के निर्धारित के न्यूनतम मान 2.65 की अपेक्षा कम है।

अतः उपरोक्त परिणामों के आधार पर निष्कर्ष स्वरूप कहा जा सकता है कि अल्पसंख्यक समूह के छात्र एवं छात्राओं के आकांक्षा स्तर–ADS पर आत्म–सम्मान का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता।

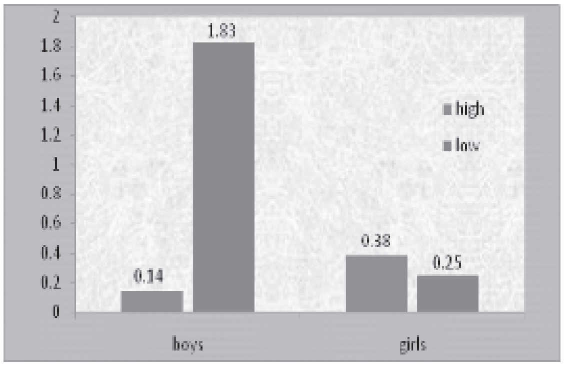

अल्पसंख्यक वर्ग के उच्च एवं निम्न आत्म–सम्मान के छात्र एवं छात्राओं के आकांक्षा स्तर–GDS (लक्ष्य भिन्नता प्राप्तांक) के परिणाम

आत्म सम्मान स्तर	अल्पसंख्यक वर्ग	छात्र संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (SD)
उच्च	छात्र	89	0.23	4.70
	छात्राएं	110	0.61	3.63
निम्न	छात्र	65	1.95	3.46
	छात्राएं	74	0.53	4.00

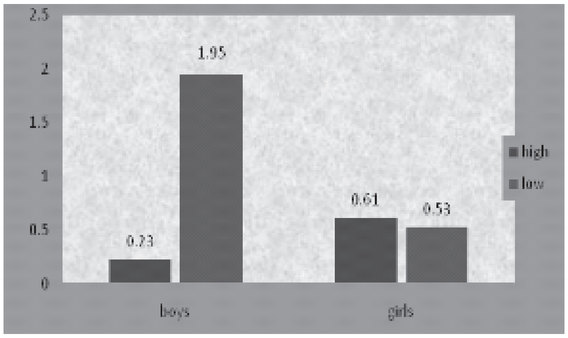

प्रासरण विश्लेषण (एनोवा) सारणी

प्रसरण के स्रोत	स्वतंत्रता के अंश (d.f)	वर्गों का योग (Sum of squares)	वर्गों का मध्यमान (Mean Square)	'एफ' अनुपात (F. Ratio)	पी मूल्य (P. value)
समूहों के मध्य	3	123.03	41.01	2.58	>0.05
समूहों के अन्तर्गत	334	[illegible]	15.90		

स्वतत्रंता के अंश—3,334

0.05 स्तर पर सार्थकता के लिये न्यूनतम मान – 2.65

0.01 स्तर पर सार्थकता के लिये न्यूनतम मान—3.88

उपरोक्त सारणी में उच्च व निम्न आत्म–सम्मान वाले अल्पसंख्यक छात्र एवं छात्राओं के आकांक्षा स्तर–GDS के तुलनात्मक परिणाम प्रदर्शित किये गये हैं। इन परिणामों से स्पष्ट होता है कि विभिन्न समूहों के मध्य सांख्यकीय दृष्टिकोण से सार्थक अंतर नहीं है क्योंकि प्राप्त एफ अनुपात का मान 2.58 है जो 0.05 स्तर के न्यूनतम निर्धारित मान 2.65 से कम है।अतः विभिन्न आत्म–सम्मान वाले अल्पसंख्यक छात्र एवं छात्राओं के आकांक्षा स्तर–GDS में सार्थक अंतर नहीं है।

अतः उपरोक्त परिणामों के आधार पर निष्कर्ष स्वरूप कहा जा सकता है कि विभिन्न अल्पसंख्यक छात्र एवं छात्राओं के आकांक्षा स्तर–GDS पर आत्म–सम्मान का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता।

अल्पसंख्यक वर्ग के उच्च एवं निम्न स्व–बोध के छात्र एवं छात्राओं के आकांक्षा स्तर–GDS के परिणाम

उपरोक्त परिणामों से स्पष्ट होता है कि स्व–बोध व्यक्ति के आकांक्षा स्तर एवं शैक्षिक निष्पादन को प्रभावित करता है। सामान्य रूप से स्व–बोध को भी अनेक कारक प्रभावित करते हैं। इन कारकों में मनोवैज्ञानिक सामाजिक तथा आर्थिक सभी प्रकार के कारक सम्मिलित रहते हैं।

सामाजिक कारकों में माता पिता व अभिभावकों का व्यवहार, परिवार के सदस्यों के आपसी संबंध, सामाजिक प्रतिष्ठा, सामाजिक स्थिति, जन्मक्रम, विद्यालय, अनुशासन, सामाजिक आर्थिक स्तर, पास–पड़ोस आदि स्व–बोध को प्रभावित करते हैं।

शोध कार्य के परिणाम यह दर्शाते हैं कि स्व–बोध स्तर आकांक्षा स्तर–GDS एवं आकांक्षा स्तर –ADS को प्रभावित नहीं करता है।

आकांक्षा स्तर को रुचियॉ, व्यक्तित्व प्रतिमान, इच्छायें, लिंग, स्व–बोध, आत्म विश्वास, सामाजिक–आर्थिक स्तर, सामाजिक पराम्परायें, रीति रिवाज, धर्म, सामाजिक मूल्य, संस्कृति सामाजिक प्रत्याशायें, सामूहिक दबाव, पारिवारिक बंधन, सामाजिक पुरस्कार, स्पर्धा, माता– पिता की आकांक्षायें, सामाजिक स्थिति एवं प्रतिष्ठा, कार्य की सफलता व असफलता, पूर्व सफलता व असफलता, अभिवृत्ति, बुद्धि, संज्ञानात्मक विकास, अवसरों की प्राप्ति आदि कारक प्रभावित करते हैं।

के. जी प्रैगर ने शहरी समुदाय के विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षा पर स्व–बोध का कोई भी सार्थक प्रभाव नहीं पाया चूंकि प्रस्तुत अध्ययन भी शहरी अल्पसंख्यक वर्ग के छात्र एवं छात्राओं पर किया गया है और वर्तमान समय में शहरी क्षेत्र में रहने वाले परिवारों में छात्र एवं छात्राओं के बीच भदभाव की भावना न के बराबर होती है और वे अपने बच्चों के भविश्य के प्रति सजग रहते हैं व उनकी इच्छाओं और आकांक्षाओं पर ध्यान देते हैं इसी

कारण निम्न व उच्च स्व –बोध स्तर होते हुये भी उनके आकांक्षा स्तर में कोई सार्थक अंतर नहीं आया है।

पॉल अरनाल्ड (1992) ने किशोरों के स्व–बोध तथा आकांक्षाओं के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं पाया। प्रस्तुत अध्ययन में अल्पसंख्यक वर्ग के ईसाई, मुस्लिम तथा सिख छात्र एवं छात्राओं के आकांक्षा स्तर–GDS एवं ADS दोनों पर ही स्व–बोध का सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया है।

निष्कर्ष

1. अल्पसंख्यक समूह के छात्र एवं छात्राओं के आकांक्षा स्तर–ADS पर आत्म–सम्मान का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता।
2. विभिन्न अल्पसंख्यक छात्र एवं छात्राओं के आकांक्षा स्तर–GDS पर आत्म–सम्मान का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता।

सुझाव

1. अल्पसंख्यक वर्ग शिक्षा की दृष्टि से बहुसंख्यक वर्ग से पिछड़े हुये हैं। इस पिछड़ेपन का मुख्य कारण इन समुदायों में आत्म–सम्मान स्तर का कम पाया जाना भी है। जिसके कारण इन समुदायों के व्यक्तियों में शिक्षा के प्रति जागरुकता भी नहीं है। इन समुदायों के व्यक्तियों में शिक्षा के प्रति रूझान उत्पन्न करके इनकी सामाजिक स्थिति का उन्नयन किया जा सकता है और शिक्षा प्राप्त करने पर व्यक्ति अपने लिये उच्च लक्ष्यों का निर्धारण करता है और उच्च लक्ष्यों की प्राप्ति के लिये अनेक प्रयास भी करता है। इन लक्ष्यों के निर्धारण व उनकी प्राप्ति के लिये आत्म–सम्मान एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। अल्पसंख्यक विद्यार्थियों के आत्म–सम्मान स्तर को बढ़ाने के लिये समय–समय पर उनका परीक्षण करना चाहिये तथा सुझाव देकर उनके स्तर को बढ़ाने का प्रयास किया जाना चाहिये ।

2. अपनी क्षमताओं का ज्ञान होने पर उसी आधार पर व्यक्ति अपने लक्ष्यों का निर्माण करता है और जीवन में सफलता प्राप्त करता है अतः उन्हें अपनी क्षमताओं का ज्ञान करने में सहायता करनी चाहिये।

3. आकांक्षा स्तर में वृद्धि करने के लिये समाज व राष्ट्र के लिये उल्लेखनीय योगदान देने वाले महापुरूषों की जीवनियों द्वारा उन्हीं के समान बनने की प्रेरणा देनी चाहिये।

4. अल्पसंख्यक किशोर–किशारियों के आत्म–सम्मान में वृद्धि होने पर उनकी आकांक्षा स्तर में भी वृद्धि होगी तथा उसका परिणाम शैक्षिक उपलब्धि पर भी पड़ेगा ।

5. शैक्षिक समस्याओं के समाधान के लिये अल्पसंख्यक विद्यार्थियों के लिये उपचारात्मक शिक्षण की व्यवस्था विद्यालयों द्वारा की जानी चाहिये ।

सन्दर्भ ग्रन्थ

भार्गव महेश (1985) **"आधुनिक मनोवैज्ञानिक परीक्षण एवं मापन"**, हरप्रसाद भार्गव, कचहरी घाट, आगरा, चतुर्थ संस्करण,पृ.स. 287

मों सुलेमान (2008)**"मनोविज्ञान, शिक्षा एवं अन्य सामाजिक विज्ञानों में साख्यिकी"**, मोतीलाल बनारसी दास, दिल्ली, छठवां संशोधित संस्करण, पृ.स. 100—159, 283—378

श्रीवास्तव डी.एन. (2009) **"व्यक्तित्व का मनोविज्ञान"**, श्री विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा—2, पृ. स. 40—47, 97, 112—114

सिंह, अरूण कुमार एवं सिहं आशीश कुमार (2012) **"व्यक्तित्व का मनोविज्ञान"** , मोतीलाल बनारसी दास, दिल्ली, पंचम संशोधित संस्करण, पृ.स. 61—62

शर्मा, आर. ए. (2005) **"अनुसंधान विधियां"**, सूर्या पब्लिकेशन्स, आर. लाल. बुक डिपो, मेरठ, पृ. स. 150—174

पटेल राहुल (2002)**"सहशिक्षा व असहशिक्षा विद्यालयों में अध्ययनरत् किशोर छात्र–छात्राओं के आत्मविश्वास, आत्म–सम्मान एवं अर्न्तवैयक्तिक संबंधों का अध्ययन"** पी.एच.–डी., रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर

शर्मा ,आर. ए. (2005) ''अधिगम एवं विकास के मनोवैज्ञानिक आधार'' पंचम संस्करण ,आर. लाल बुक डिपो, सूर्या पब्लिकेशन ,मेरठ, पृ. स. 91,97,116,120,175—176

सिंह ,अरुण कुमार (1999) ''समाज मनोविज्ञान की रूपरेखा'' चतुर्थ संस्करण ,मोतीलाल बनारसीदास, बंगला रोड ,दिल्ली ,पृ.स. 92—93

Prager K.G. (1979) "Self esteem, academic Competence, Educational aspiration and curriculum Choice of Unban community College students." Journal of College student personal, Vol 20, NSP, 392-397 Sept (1979)

Pull man and Allikk,Nager et al. (2008) : "Relations of academic and general self-esteem to school achievement" personal and Individual Differences, 45: 559-564

Partington, Kimberly (2004) : "The impact of self-esteem on academic achivement and aspiration of Urban minority adolescents." Desertation Abstract-International: Section B: The science and Engineering Vol 65 (4-B) 2128 (Through Internet)

Redenback, (1991) : Self Esteem, the necessary ingredient for success." Esteem seminar programs and publications, USA.